## Rise of Mussolini and Fascism(Part-3)

FOR:P.G.SEM-2,CC-6,UNIT-2

BANITO MUSSOLINI

- **फासिस्ट सिद्धांत**:- प्रथम महायुद्ध के पश्चात इटली में फासिज्म की स्थापना हुई

जिसका संस्थापक **मुसोलिनी** था। मार्क्स तथा लेनिन की भांति मुसोलिनी ने फासिस्ट वाद के आधारभूत सिद्धांत निर्धारण नहीं किए ।उसने कोई राजनीतिक तथा नागरिक जीवन से संबंधित घोषणा पत्र प्रकाशित नहीं किया था ।फासिस्ट वाद के संदर्भ में मुसोलिनी ने लिखा है कि -**फासीवाद कोई ऐसा सिद्धांत नहीं है जिसकी हर बात को विस्तार पूर्वक पहले से ही स्थिर कर लिया जाए** ।फासीवाद का जन्म कार्य किए जाने की आवश्यकता के कारण हुआ है ।फासीवाद सैद्धांतिक होने के स्थान पर आरंभ से ही व्यवहारिक रहा है । मुसोलिनी ने कहा है कि -'**फासीवाद यथार्थ पर आधारित है जबकि साम्यवाद सिद्धांत पर**' ।मुसोलिनी के नेतृत्व में जो शासन स्थापित हुई और जिन बातों के आधार पर शासन का संचालन किया गया और समय-समय पर मुसोलिनी ने जो बातें कहीं यह सब सम्मिलित रूप से फासीवादी सिद्धांतों के अंतर्गत रखी जा सकती है। **इतिहासकार सेवाइन** ने कहा है कि 'फासिज्म अस्पष्ट है क्योंकि यह विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विभिन्न विचारों का संकलन मात्र है।'

1. **राज्य सर्वोपरि**:- फासीवादी सिद्धांत के अनुसार राज्य का स्थान सर्वप्रथम और सर्वोच्च है और उसके बाद फिर राज्य ही आता है जो कृपा करके व्यक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करता है क्योंकि इससे राज्य प्रसन्न होता है और अंत में भी राज्य के अलावा कोई चीज महत्वपूर्ण नहीं है। संक्षेप में सभी कुछ राज्य के भीतर है ,राज्य ही आत्मा है। मुसोलिनी ने कहा कि न तो व्यक्ति ,न समूह ,न राजनीतिक दल,न वर्ग- संगठन राज्य की परिधि से बाहर है।
2. **सर्व सत्तात्मक राज्य का समर्थन:-** मुसोलिनी सामूहिक कल्याण के लिए एक दल एक नेता के सत्ता में विश्वास करता था अतः समस्त राष्ट्र का प्रधान कमांडर (Duce) बन गया। वह कहा करता था कि राज्य में प्रमुख अधिकारी एक से अधिक नहीं हो सकते क्योंकि राज्य के समस्त कार्यों में एकता लाने और उनका निर्देशन एवं निगमन करने के लिए एक प्रमुख होना आवश्यक है। इस प्रकार शासन की समस्त सत्ता उसके हाथों में आ गई। राज्य की राजनीतिक ,सैनिक तथा आर्थिक आदि समस्त संस्थाओं पर उसका नियंत्रण स्थापित हो गया। राष्ट्र की नीति का संचालन करने का कार्य उसी के हाथ में था। ग्रांड काउंसिल ऑफ फासिस्ट पार्टी तथा उसके नेता पर नियंत्रण स्थापित हो गया था।
3. **व्यक्तिवाद का विरोध:-** फासीवाद व्यक्तिवाद का विरोधी है। राज्य व्यक्ति के लिए नहीं अपितु व्यक्ति राज्य के लिए है। राज्य के बाहर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता। वह राज्य में ही रहकर उसके प्रति अपने कर्तव्यों की पूर्ति कर ही उन्नति कर सकता है। इस प्रकार मुसोलिनी राज्य को साध्य तथा व्यक्ति को साधन मानता था। वह व्यक्ति को उतना ही स्वतंत्रता देना चाहता था जितनी कि राज्य की सुविधा में बाधा ना डालें। व्यक्ति को कितनी स्वतंत्रता दी जाए इसका निर्णय राज्य ही करेगा। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि फासीवाद के अंतर्गत राष्ट्र के हित के लिए व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है।
4. **लोकतंत्र का विरोध:-** फासीवाद लोकतंत्र का विरोधी है।वह लोकतंत्र को भीड़ तंत्र मानता है ।उसके अनुसार 1789 ईस्वी में फ्रांस की राज्यक्रांति द्वारा जो लोकतंत्र की

लहर चली वह सच्चे अर्थों में जनता का राज्य कायम नहीं कर सकी। लोकतंत्र में व्यक्ति को जो स्वतंत्रता मिली रहती है उसका यह परिणाम होता है कि पूँजीपति अधिक अमीर होते चले जाते हैं और गरीबों के शोषण को अपनी मर्जी से अंजाम देते हैं ।अतः व्यक्ति स्वतंत्र और लोकतंत्र का अंत करके ऐसी व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिए जिसमें सब लोगों को परस्पर सहयोग द्वारा उन्नति करने का अवसर मिले। ऐसा तभी संभव है जब देश में केवल एक पार्टी और केवल एक नेता हो जो सबके हित में वह आज्ञा दे और सब उसे मिलकर स्वीकार करें। इसी विचारधारा के कारण उसने स्थानीय शासन का अंत कर दिया ,लोकसभा के जनतंत्रात्मक निर्वाचनों का अंत कर दिया,न्यायालय से जुरी प्रथा समाप्त कर दी ,जनता के भाषण तथा प्रकाशन के अधिकार पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए । समस्त देश में गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया था।

5. **साम्यवाद का विरोध:-** फासीवाद मार्क्स के साम्यवादी सिद्धांत का विरोधी और मार्क्सवाद के **ऐतिहासिक भौतिकवाद** के सिद्धांत को नहीं मानता था जिसके अनुसार इतिहास का निर्माण आर्थिक तत्वों से नहीं बल्कि राजनीतिक तत्वों से हुआ है। इतिहास के निर्माण में राजनीतिक घटनाओं का भी बहुत महत्व है। इसके साथ-साथ वह वर्ग संघर्ष को भी स्वीकार नहीं करता ।वह वर्ग संघर्ष के स्थान पर सब वर्गों के सहयोग पर जोर देता है। इसके अनुसार साम्यवाद द्वारा सबको सुख प्राप्त नहीं हो सकता । राज्य के हित के लिए किसान, मजदूर तथा पूंजीपति आदि पर आर्थिक नियंत्रण होना चाहिए। इसी के आधार पर सबको सुख प्राप्त हो सकता है।

6. **स्वतंत्र व्यापार का विरोध :-** फासीवादी स्वतंत्र व्यापार के विरोधी थे।उनका कहना है कि आज के युग में अनेक आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हो गई है अतः आर्थिक व्यवस्था में सरकार का हस्तक्षेप होना स्वाभाविक हो गया है।

7. **शांति विरोधी:-** मुसलोनि शांति का कट्टर विरोधी और युद्ध एवं साम्राज्यवाद का कट्टर समर्थक था। मुसोलिनी ने कहा युद्ध समस्त मानवीय शक्ति को उच्चतम शिखर तक पहुंचाता है तथा जो युद्ध का सामना करने का साहस रखते हैं उन व्यक्तियों पर श्रेष्ठता की मुहर लगा देता है। शांति को वह उस सरोवर के समान मानता है जहां जल स्थिर रहता है। उन्नति का अर्थ है आगे बढ़ना तथा आगे बढ़ने का अर्थ है दूसरों को पद दलित करना इस प्रकार शांति के विरोध का अर्थ है शक्ति प्राप्त करना तथा शक्ति प्राप्त करने का अर्थ है साम्राज्य विस्तार। मुसोलिनी नागरिकों को सलाह देता था कि 'तुम खतरनाक बन कर जीवन व्यतीत करो। मैं आगे बढ़ता हूं तो मेरा नेतृत्व स्वीकार करो अन्यथा मुझ को गोली मार दो। मैं शांति का विरोधी हूं जिस प्रकार स्त्रियों को गर्भ धारण करने का कष्ट सहन करना पड़ता है उसी प्रकार पुरुषों को युद्ध में जाकर कष्ट सहन करना चाहिए। वास्तव में मुसोलिनी इटली को सैनिक राष्ट्र बनाना चाहता था **इतिहासकार कार्ली** ने ठीक ही लिखा है -'युद्ध में ही फासिस्ट वाद का जन्म हुआ है तथा युद्ध में ही इसका विकास होगा।'

8. **बुद्धिवाद का विरोध:-** फासीवाद तर्क एवं बुद्धि वाद का विरोधी है। उसके अनुसार राज्य जो कहे वही ठीक है ।जनता को अपने नेता की आज्ञा का आंख मूंदकर पालन करना चाहिए ।इस दृष्टि से फासीवाद राजनीतिक क्षेत्र में अज्ञानता एवं अंधभक्ति का समर्थक है ।फासीवादी सिद्धांतों के अनुसार नेता को तर्क के आधार पर नहीं बल्कि भावना के आधार पर जनता का सहयोग प्राप्त करना चाहिए।
9. **मुक्त व्यापार विरोधी**:- फासीवाद मुक्त व्यापार की नीति का विरोध करता है क्योंकि इसके कारण तमाम सामाजिक समस्याएं व आर्थिक असंतुलन पैदा होता है इसलिए आर्थिक व्यवस्था सरकार के हाथों में होनी चाहिए।

**फासिस्ट युवक संगठन:** फासिस्टों नें युवकों को अपना समर्थक बनाने के लिए फासिस्ट युवक संगठन का निर्माण किया तथा प्राइमरी और माध्यमिक पाठशाला में फासीवादी सिद्धांतों को शिक्षा देना अनिवार्य कर दिया। 8 वर्ष से कम आयु के लड़कों के लिए **प्रि-बालिला(Pre-Ballila)** तथा 8 से 14 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए **बालिला**(Ballila) नामक संस्थाओं का गठन किया गया ।14 वर्ष से 18 वर्ष के बच्चों के लिए **अवानगार्डिया(Avanguardia)** नामक संस्था की स्थापना की तथा 19 से 21 वर्ष तक की आयु के नवयुवकों के लिए **गियोवानी फासिस्टी**(Giovani Fascisti) नामक संस्थाएं स्थापित की गई ।बालिकाओं के लिए **पिकोले इटालियन(Piccole Italian)** एंव **गियोवानी इटालियन(Giovani Italian**) नामक दो संस्थाएं बनाई गई इन संस्थाओं में प्रशिक्षित युवक व युवतियां ही फासिस्ट दल के सदस्य बन सकते थे।

**फासीवादी आर्थिक नीति**:-

1. मुसोलिनी इटली की अर्थव्यवस्था को फासीवादी सांचे में ढाला।
2. उसने एक नवीन आर्थिक व्यवस्था का निर्माण किया जिसे **सिंडीकेलिज्म** कहा जाता है।
3. फासीवादी आर्थिक नीति के अनुसार प्रत्येक आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप करना एवं उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखने का पूरा अधिकार राज्य को है ।यहां ध्यान रखने योग्य बात यह है कि वे साम्यवादियों की तरह सभी व्यवसाय को सीधा राज्य के नियंत्रण में लेना पसंद नहीं करते थे बल्कि उन्हीं व्यवसाय को लेना चाहते थे जो राज्य की रक्षा के लिए उपयोगी है ।इसी उद्देश्य से रेलवे ,लोहे के कारखानों व अन्य व्यवसायों को राज्य के अधिकार में ले लिया गया।
4. **सिंडिकेट व्यवस्था**:- फासिज्म वर्ग संघर्ष के विरुद्ध था अतः उसने मजदूरों एवं पूंजी पतियों के बीच सहयोग के माध्यम से आर्थिक विकास करना चाहा। इसी संदर्भ में मुसोलिनी सिंडिकेट व्यवस्था को राष्ट्रव्यापी रुप दिया ।इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य उधोगपतियों एवं श्रमिकों के बीच वर्ग संघर्ष को समाप्त करना एवं उनकी समस्याओं तथा विवादों का पारस्परिक सहयोग एवं समझौते द्वारा समाधान करना था जिससे दोनों

के हितों की रक्षा की जा सके ताकि उत्पादन में कोई बाधा उत्पन्न ना हो। मुसोलिनी नें 1926 ईस्वी में 13 **सिंडिकेट** ( श्रम संघ )की स्थापना की। इनमें छह मजदूरों के छह पूंजी पतियों के एवं एक डॉक्टर एवं वकीलों का सिंडिकेट था ।इन सब सिंडिकेटों का संचालन एवं नियंत्रण एक **मंत्री** द्वारा होता था। सिंडिकेट मजदूरी की दर ,काम के घंटे, संवैतनिक अवकाश, बीमा की रकम ,मनोरंजन के साधन, पर्यटन आदि की व्यवस्था करता था ।हड़ताल तथा तालाबंदी का पूर्णतः निषेध कर दिया गया।

- 1928 ईस्वी में सिंडिकेट व्यवस्था का संबंध राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ दिया गया। इस वर्ष एक कानून द्वारा चेंबर ऑफ डेपुटीज के निर्वाचन की पद्धति बदल दी गई थी और केवल फासिस्ट दल की सूची पर ही मत किया जाने लगा। इस कानून के अनुसार 13 राष्ट्रीय सिंडीकेटों की सामान्य परिषदें रोम में मिलकर 800 व्यक्तियों की सूची बनाती थी। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक तथा परोपकारी संस्थाएं 200 व्यक्तियों के नाम भी भेजती थी । इन 1000 नामों में से फासिस्ट ग्रांड काउंसिल केवल 400 व्यक्तियों के नामों का चुनाव करता था और इन्हीं 400 व्यक्तियों की सूची पर मतदान ' हाँ' या 'नहीं' में किया जाता था ।इस प्रकार इटली पहला पश्चिम देश था जिसके राष्ट्रीय विधान मंडल का गठन विभिन्न व्यवसायिक हितों के प्रतिनिधित्व के आधार पर किया जाता।आगे चलकर मुसोलिनी ने इन्हीं सिंडिकेट को निगमात्मक (Corporate) रुप दिया।

To be continued...

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OFHISTORY
MAHARAJA COLLEGE, ARA

Last modified: 12:18